

मामलों का विवरण

नीतिशा और अन्य बनाम।

भारत और अन्य का संघ

(2022 का विविध अनुप्रयोग सं. 1913)

(2020 की लिखित याचिका (सिविल) संख्या 1109) 3 नवंबर, 2023

[डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई, जे. बी. पारदीवाला और मनोज मिश्रा, जे. जे.]
हेडनोट्स

विचार के लिए विषय: यह मुद्दा भारतीय सेना की महिला अधिकारियों से संबंधित है, जिन्हें लेफ्टिनेंट कर्नल नितीशा और अन्य बनाम भारत संघ और अन्य मामले में इस अदालत के फैसले के अनुसरण में स्थायी कमीशन दिया गया था, चयन द्वारा कर्नल के पद पर पदोन्नति के लिए गैर-पैनल से पीड़ित हैं।

सशस्त्र बल-महिला अधिकारी-चयन द्वारा कर्नल के पद पर पदोन्नति-महिला अधिकारियों को लेफ्टिनेंट कर्नल नितीशा बनाम भारत संघ के मामले के अनुसार स्थायी कमीशन-पी. सी. प्रदान किया गया, जो चयन द्वारा कर्नल के पद पर पदोन्नति के लिए गैर-सूचीकरण से पीड़ित था-याचिका कि **1992** बैच से **2005** तक महिला अधिकारियों की सभी गोपनीय रिपोर्ट-सी. आर. पर विधिवत विचार नहीं किया गया और हाल ही में सी. आर. को विचार से बाहर रखा गया:

आयोजित किया गया: जिस तरीके से महिला अधिकारियों के सी. आर. को कर्नल के रूप में सूचीबद्ध करने के लिए कट ऑफ लागू किया गया था, वह मनमाना है, क्योंकि कई वर्षों से सी. आर. को पूरी तरह से गणना से बाहर रखा गया था-महिला अधिकारियों के न्यायसंगत अधिकार को हराने के लिए रवैया और कोई तरीका था-इस तरह का दृष्टिकोण महिला अधिकारियों को न्याय प्रदान करने की आवश्यकता को आहत करता है-जिस तरीके से आवेदकों को चयन के आधार पर कर्नल के पद के लिए सूचीबद्ध करने से इनकार किया गया है, वह मनमाना और निष्पक्षता के मौलिक सिद्धांतों का उल्लंघन है-संपूर्ण दृष्टिकोण नितीशा मामले में इस अदालत के फैसले के साथ-साथ 514 द्वारा निर्धारित नीतिगत ढांचे के विपरीत है।

513

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 15 एस सी आर।

सेना के अधिकारी-इस प्रकार, उन सभी महिला अधिकारियों के लिए निर्धारित अवधि के भीतर विशेष संख्या 3 एस. बी. को फिर से बुलाने का निर्देश जारी करना, जिन पर पहले विशेष संख्या 3 एस. बी. द्वारा विचार किया गया था (उन अधिकारियों को छोड़कर जिन्हें पहले ही सूचीबद्ध किया जा चुका है)-भारत का संविधान-अनुच्छेद 14।[पारस 21-23]

शहरों और अन्य संदर्भों की सूची

*लेफ्टिनेंट कर्नल नितिशा और अन्य बनाम भारत संघ और अन्य (2021) 15 एस. सी. सी. 125-संदर्भित।

अन्य मामलों के विवरणों में आयातित आदेश और आवेदन शामिल हैं

सिविल अपीलीय न्यायनिर्णय:2020 की रिट याचिका (सिविल) No.1109 में 2022 का विविध आवेदन No.1913।

डब्ल्यू. पी. में 25.03.2021 दिनांकित निर्णय और आदेश से। (ग) भारत के उच्चतम न्यायालय का 2020 का No.1109।

के साथ

2020 की रिट याचिका (सिविल) No.1109 में 2023 का विविध आवेदन No.246।

रूप:

आर. वेंकटरमानी, एजी, सुश्री वी. मोहना, हुजेफा अहमदी, आर. बालासुब्रमण्यम, गोपाल शंकरनारायणन, वरिष्ठ अधिवक्ता।, श्रीमती स्नेहा बडवे, सुश्री भव्य पांडे, राकेश कुमार, सुश्री रश्मि सिंह, संजय कुमार यादव, सुश्री अर्चना पाठक डेव, मुकेश कुमार मरोरिया, चितवन सिंघल, सुश्री सोनाली जैन, अभिषेक कुमार पांडे, रमन यादव, कार्तिकेय अग्रवाल, अरविंद कुमार शर्मा, सुश्री सीमा बेनगनी, सुश्री श्रद्धा देशमुख, अदित खुराना, सुबोध पाटिल, श्रीमती स्वरूपमा चतुर्वेदी, अनिरुद्ध शर्मा द्वितीय, अमन शुक्ला, डॉ. एन. विशाखमूर्ति, चिनमयी चंद्र, राजन कुमार चौरसिया, सुश्री पूजा धर, हरीश पांडे, मोहित डी. राम, सुश्री लिज़ मैथ्यू, अनंत विजय पल्ली, निखिल पल्ली, दीपकउपस्थित दलों के लिए।

नीतिशा और अन्य बनाम भारत संघ 516

515

सर्वोच्च
न्यायालय का
निर्णय/आदेश

न्याय

डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई

1. आवेदनों के एक समूह में उठाया गया मुद्दा लेफ्टिनेंट कर्नल में इस न्यायालय के फैसले के कार्यान्वयन से संबंधित है।

नितिशा और अन्य बनाम भारत संघ और अन्य **1.**

2. इस न्यायालय के समक्ष शिकायत भारतीय सेना की महिला अधिकारियों द्वारा की गई है, जिन्हें इस न्यायालय के फैसले के अनुसरण में स्थायी कमीशन 2 दिया गया है। विवादग्रस्त मुद्दा चयन द्वारा कर्नल के पद पर पदोन्नति के लिए उनके गैर-पैनल से संबंधित है।

3. तथ्यात्मक शिकायत का विश्लेषण करने से पहले, नीतिगत ढांचा निर्धारित करना उचित होगा।

4. 7 अक्टूबर 2002 को, सेना मुख्यालय की सैन्य सचिव की 3 शाखा द्वारा एक संचार जारी किया गया था जिसमें यह निर्धारित किया गया था कि किस आधार पर विभिन्न चयन बोर्डों के लिए गोपनीय रिपोर्ट 4 पर विचार किया जाएगा। दस्तावेज़ का शीर्षक है:

“चयन बोर्ड (एसबी) के लिए सी. आर. पर विचार ”

5. पत्र का पैराग्राफ 3 ए लेफ्टिनेंट कर्नल के पद से कर्नल के पद पर पदोन्नति के लिए नंबर 3 एस. बी. और मेजर के पद से लेफ्टिनेंट कर्नल के पद पर पदोन्नति के लिए नंबर 4 एस. बी. से संबंधित है। हम नंबर 3 एस. बी. से चिंतित हैं क्योंकि विवाद लेफ्टिनेंट कर्नल के पद से कर्नल के पद पर पदोन्नति से संबंधित है। पैराग्राफ 3 (ए) इंगित करता है कि “नौ साल की गणना योग्य सेवा के पूरा होने के बाद अर्जित सभी सी. आर.” पर विचार किया जाना चाहिए।

6. 17 मार्च 2011 को रक्षा मंत्रालय (सेना) के एकीकृत मुख्यालय की एमएस शाखा द्वारा “क्वांटिफाई एंड सिस्टम” को अपनाने और लागू करने के लिए एक और संचार जारी किया गया था।

1 (2021) 15 एससीसी 125 2 “पीसी”

3 “एमएस ”4” सीआर ”5” एसबीएस ”

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 15 एस सी आर।

चयन करें। पत्र के पैराग्राफ 3 में कहा गया है कि 7 अक्टूबर 2002 के पहले के पत्र के पैराग्राफ 3 को निम्नलिखित शब्दों में बदला जा रहा था:

“...विभिन्न चयन बोर्डों के लिए सी. आर. पर विचार के समय प्रचलित नीति के अनुसार विचार किया जाएगा।”

7. 31 अक्टूबर 2013 को, एमएस शाखा ने 2002 के अधिकारियों और एसबी नंबर 3 द्वारा बाद के बैचों पर विचार करने के लिए एक व्यापक पर्याप्त अभ्यास (आई) नीति निर्धारित करने के लिए एक संचार जारी किया। वृत्ताकार के लिए परिशिष्ट ए, अन्य बातों के साथ, विशिष्ट रूप से एस को काट

दिया जाता है। पैराग्राफ 4 में कहा गया है कि अंतिम रिपोर्ट (विशेष सी. आर. सहित) को एस. बी. द्वारा कुछ शर्तों के अधीन अगले उच्च पद पर पदोन्नति के लिए विचार में लिया जाता है। शर्तों में, शर्त (सी) इंगित करती है कि:

“चयन बोर्ड के संचालन से पहले एम. एस. शाखा द्वारा एक बैच के अधिकारियों के संबंध में कट-ऑफ सी. आर. जारी किया जाएगा।”

8. 23 दिसंबर 2017 को, एमएस शाखा ने एक और संचार जारी किया। संचार विशेष संख्या 3 एस. बी. के लिए पाठ्यक्रमों और वीरता पुरस्कारों पर प्रदर्शन जैसे अन्य मानकों की तुलना में सी. आर. की प्रधानता प्रदान करता है। यह निर्धारित किया गया है कि कुल 100 में से 89 अंक सी. आर. को आवंटित किए जाएंगे।

9. नितीशा (ऊपर) में इस अदालत के फैसले में भारतीय सेना के महिला अल्पकालिक सेवा आयोग अधिकारियों (डब्ल्यू. एस. एस. सी. ओ.) को पी. सी. से इनकार करने पर विचार किया गया। वर्तमान मामले में विवाद पर कुछ प्रकाश डालने के लिए, अनुच्छेद 109.5 और 113 में टिप्पणियों का उल्लेख करना उचित होगा, जो इस प्रकार हैं:

“ 109.5 काउंटर-एफी-डेविट में यह स्वीकार किया गया है कि महिला अधिकारियों के मामले में 5 वें या 10 वें वर्ष की सेवा के संबंध में गोपनीय रिपोर्ट, अनुशासन और सतर्कता रिपोर्ट, यदि कोई हो, और सम्मान और पुरस्कारों पर विचार किया गया था। इसके परिणामस्वरूप, सेवा के 5 वें या 10 वें वर्ष (जैसा भी मामला हो) के बाद महिला अधिकारियों की योग्यता, उपलब्धियों और प्रदर्शन को नजरअंदाज कर दिया गया है। इस स्तर पर, यह ध्यान रखना आवश्यक है कि एओ 18/1988 के पैरा 13 (बी) में पीसी के अनुदान के लिए "पीसी के लिए मूल्यांकन से पहले अंतिम एसीआर" पर विचार किया गया है। इसी तरह रक्षा मंत्रालय का दिनांकित नीति पत्र विशेष रूप से 517 के समग्र प्रदर्शन का मूल्यांकन करने पर विचार करता है।

नीतिशा और अन्य बनाम भारत संघ [डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई] 518

आधिकारिक तौर पर, "प्रत्येक वर्ष के साथ-साथ आधिकारिक सेवाओं की पूरी अवधि के लिए औसत पर काम किया जाएगा।" पैरा 4 (ए) इस प्रकार निर्धारित करता है:

“(क) क्यूएपी:एफ. टी. ओ. और एच. टी. ओ. के अलावा अन्य सभी रिपोर्टिंग कार्यालयों के आलंकारिक मूल्यांकन का औसत लेकर कार्यालय के समग्र प्रदर्शन का मूल्यांकन किया जाता है। औसत इच्छा

प्रत्येक वर्ष के साथ-साथ पूरी अवधि के लिए काम किया जाए

ऑफिसर सेवा। बाद वाले क्यू. ए. पी. को 75 अंकों के अनुपात में परिवर्तित किया जाएगा।”

(जोर दिया गया) उपरोक्त स्पष्ट शर्तों के बावजूद, अब यह एक स्वीकृत स्थिति है कि सेवा के 5 वें/10 वें वर्ष से परे डब्ल्यू. एस. एस. सी. ओ. के विशिष्ट रिकॉर्ड की अवहेलना की गई है।

5 वें/10 वें वर्ष की सेवा के बाद राष्ट्र की सेवा में उनके द्वारा प्राप्त सम्मान को नजरअंदाज कर दिया गया है।

113. अंत में, उपरोक्त विश्लेषण से संकेत मिलता है कि डब्ल्यू. एस. एस. सी. ओ. की 5 वें/10 वें वर्ष की सेवा की उपलब्धियों का अनुमान लगाने का एक आश्चर्यजनक प्रयास किया गया है, जिससे इस जनादेश की अनदेखी की गई है कि अंतिम ए. सी. आर. पर विचार किया जाना चाहिए और सेवा के पूरे रिकॉर्ड के लिए मात्रात्मक प्रदर्शन का मूल्यांकन किया जाना चाहिए। यदि उस समय डब्ल्यू. एस. एस. सी. ओ. को पी. सी. के लिए विचार किया जा रहा होता तो पी. सी. के अनुदान के लिए सेवा के 5 वें या 10 वें वर्ष के ए. सी. आर. पर विचार करना उचित होता। हालाँकि, सेना द्वारा डब्ल्यू. एस. एस. सी. ओ. को पी. सी. अनुदान के विलंबित कार्यान्वयन और केवल 5 वें/10 वें वर्ष की सेवा तक ए. सी. आर. पर विचार करने से ऐसी स्थिति पैदा हो गई है कि सेना ने डब्ल्यू. एस. एस. सी. ओ. द्वारा प्राप्त वर्षों की सेवा, कड़ी मेहनत और सम्मान को उनकी 5 वें/10 वें वर्ष की सेवा से परे भुला दिया है और उन्हें कुछ मामलों में 10 साल से अधिक पहले के पद पर वापस भेज दिया है। पी. सी. के अनुदान के लिए डब्ल्यू. एस. एस. सी. ओ. के हाल के प्रदर्शन पर विचार की कमी न केवल इन अधिकारियों के लिए नुकसानदायक है जिन्होंने राष्ट्र की सेवा की है, बल्कि भारतीय सेना के लिए भी नुकसानदायक है, जो एक ओर इन अधिकारियों को सम्मान और सजावट प्रदान करके उन्हें सलाम करती है, और दूसरी ओर, इन सम्मानों के वास्तविक मूल्य का आकलन करने में विफल रहती है जब यह महत्वपूर्ण होता है।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 15 एस सी आर।

अधिकांश-डब्ल्यू. एस. एस. सी. ओ. के लिए खड़े होने के समय संविधान के तहत अपने अधिकारों का एहसास करना और पुरुष अधिकारियों के रूप में समान आधार पर व्यवहार किया जाना चाहिए जिन्हें पी. सी. प्रदान किया जाता है।

10. वर्तमान मामले में विवाद का मुद्दा उस तरीके से संबंधित है जिसमें उपरोक्त मामले में निर्णय के बाद विशेष संख्या 3 एस. बी. के उद्देश्य से महिला अधिकारियों के सी. आर. का मूल्यांकन किया गया था।

11. 12 दिसंबर 2022 को एक संचार में, एमएस शाखा ने महिला अधिकारियों के "पद" (यानी, "पीसी के अनुदान" के बाद) के संबंध में विशेष संख्या 3 एसबी द्वारा पालन किए जाने वाले तौर-तरीकों पर चर्चा की। जहां तक उनके सी. आर. का संबंध है, पत्र का अनुच्छेद 2 (बी) इस प्रकार है:

“ सीआरएस। डब्ल्यू. ओ. एस. स्प्ल नंबर 3 एस. बी. के लिए कट-ऑफ सी. आर. की तारीखें उनके संबंधित पुरुष बैचों के समान होंगी, जब उन पर नंबर 3 एस. बी. द्वारा विचार किया गया था।

12. इस न्यायालय के समक्ष महिला अधिकारियों की शिकायत यह है कि उपरोक्त निर्देश के परिणामस्वरूप, 1992 बैच से 2005 तक महिला अधिकारियों के सभी सी. आर. पर विधिवत

विचार नहीं किया गया है और हाल के सी. आर. को विचार से बाहर रखा गया है। यह उस सारणी में इंगित किया गया है जो न्यायालय के समक्ष आवेदन के साथ संलग्न है जिसे नीचे पुनः प्रस्तुत किया गया है:

एस नं.	बैच	सी. आर. डी. टी. में लगभग कटौती	अनुभाग संख्या 3 एस. बी. डी. टी.	उन वर्षों की संख्या जिन पर अनुभाग संख्या 3 एस. बी. (लगभग) के लिए विचार नहीं किया गया है।
1	1992	2008	09 जनवरी 2023	14
2	1994	2010	09 जनवरी 2023	12
3	1995	2011	10 जनवरी 2023	11
4	1996	2012	11 जनवरी 2023	10
5	1997	2013	12 जनवरी 2023	9
6	1998	2014	13 जनवरी 2023	8
7	1999	2015	14 जनवरी 2023	7
8	2000	2016	15 जनवरी 2023	6
9	2001	2017	16 जनवरी 2023	5
10	2002	2018	17 जनवरी 2023	4
11	2003	2019	18 जनवरी 2023	3

नीतिशा और अन्य बनाम भारत संघ [डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई] 520

519

12	2004	2020	19 जनवरी 2023	2
13	2005	2021	20 जनवरी 2023	1

13. हमने श्री हुज़ेफा अहमदी और सुश्री वी मोहना, वरिष्ठ वकील को उन आवेदनों के समर्थन में सुना है जिनका नेतृत्व महिला अधिकारी कर रही हैं। अटॉर्नी जनरल श्री आर. वेंकटरमानी, वरिष्ठ वकील श्री आर. बालासुब्रमण्यम के साथ भारत संघ की ओर से पेश होते हैं।

14. श्री अहमद और सुश्री मोहना द्वारा जो शिकायत की गई है, वह ठीक यही है:

(i) नीति परिपत्रों के संदर्भ में कर्नल के पद के लिए महिला अधिकारियों के पैनेल पर नौवें वर्ष की सेवा के बाद सभी सी. आर. के आधार पर विचार किया जाना आवश्यक है।

((ख) नितिशा (उपर्युक्त) मामले में निर्णय में, इस न्यायालय ने महिला अधिकारियों के संपूर्ण प्रोफाइल पर विचार करने की आवश्यकता पर जोर दिया था, यद्यपि पी. सी. के अनुदान के संदर्भ में;

(iii) एक विसंगतिपूर्ण स्थिति के परिणामस्वरूप, यद्यपि पीसी के अनुदान के लिए, पूरी गणना योग्य सेवा को ध्यान में रखा गया है, फिर भी उन्हें कर्नल के रूप में सूचीबद्ध करने के लिए विचार करने के मामले में, उनके सी. आर. के एक बड़े हिस्से को पुरुष अधिकारियों के साथ एक स्पष्ट समानता लाने के आधार पर विशेष संख्या 3 एस. बी. द्वारा विचार से बाहर रखा गया है; और

((iv) सेना के अधिकारियों द्वारा अपनाया गया दृष्टिकोण नीतिगत परिपत्रों के साथ-साथ इस न्यायालय के फैसले के विपरीत है।

15. इन कार्यवाहियों में भारत संघ की ओर से विरोधी पक्षों का नेतृत्व किया गया है। विद्वान महान्यायवादी ने प्रस्तुत किया है कि 108 महिला अधिकारियों को उसी आधार पर कर्नल के रूप में पदोन्नति के लिए सूचीबद्ध किया गया है जो इंगित करेगा कि कोई भेदभाव नहीं किया गया है। महान्यायवादी ने भारत संघ के काउंटर अफि डेविट में दिए गए स्पष्टीकरण पर भरोसा किया है।

16. काउंटर अफि डेविट में, यह समझाया गया है कि विशेष संख्या 3 एस. बी. और विशेष संख्या 5 एस. बी. के संचालन के लिए अपनाई जाने वाली प्रक्रिया के बीच अंतर है। उत्तरार्द्ध में, पीसी के अनुदान के लिए विचार किए जाने वाले अधिकारी को बोर्ड द्वारा केवल एक 'रूप' मिलता है। जिस पर

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 15 एस सी आर।

दूसरी ओर, विशेष संख्या 3 एस. बी. के मामले में, प्रत्येक कार्यालय को बोर्ड द्वारा अनिवार्य रूप से तीन रूप (नया रूप, पहली समीक्षा और अंतिम समीक्षा) मिलते हैं। प्रत्येक रूप के लिए, सी. आर. के लिए एक कटऑफ तिथि होती है। आम तौर पर, विशेष संख्या 3 एस. बी. में ये तीन रूप तीन साल की अवधि में भारतीय सेना के अधिकारियों को दिए जाते हैं। हालाँकि, विचाराधीन महिला अधिकारियों के मामले में, जनवरी 2023 में एक ही समय में तीन अनिवार्य रूप दिए गए थे ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि (i) जिन महिला अधिकारियों ने अभी-अभी पीसी प्राप्त किया था, उन्हें नंबर 3 एस. बी. में पदोन्नति के लिए विचार किए जाने के लिए और दो या तीन साल तक इंतजार नहीं करना चाहिए; और (ii) एक बार जब वे पैनेल में शामिल हो जाते हैं, तो उन्हें कमान नियुक्तियों में तैनात किया जाएगा ताकि वे नंबर 2 एस. बी. द्वारा आगे की पदोन्नति के लिए विचार किए जाने के लिए आवश्यक अनुभव अर्जित कर सकें। यह प्रस्तुत किया गया है कि महिला अधिकारियों के पेशेवरों की तुलना पुरुष समकक्षों के साथ नहीं की गई है, बल्कि महिला अधिकारियों के साथ की

गई है जो उनके बैच के साथी थे। इस संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों से निष्कर्ष निकालना उचित होगा जो प्रतिवाद में निहित हैं:

“विस्तृत जानकारी के लिए, चयन बोर्ड द्वारा प्रत्येक अधिकारी को पदोन्नति के लिए तीन रूप दिए जाते हैं। यदि किसी ऑफिशियर को उनके नए (पहले) रूप में सूचीबद्ध नहीं किया जाता है, तो उसे एक और विश्वसनीय रिपोर्ट के अतिरिक्त इनपुट के साथ दूसरे रूप (पहली समीक्षा) में पदोन्नति के लिए माना जाता है। यदि फिर से पैनल में शामिल नहीं किया जाता है, तो आधिकारिक निकाय को गोपनीय रिपोर्ट के एक और अतिरिक्त इनपुट के साथ तीसरी नज़र (अंतिम समीक्षा) दी जाती है। यही कारण है कि सभी नवीनतम सी. आर. को इस कारण से ध्यान में नहीं रखा जाता है कि दूसरा और तीसरा रूप तब वैकल्पिक रूप से प्रस्तुत किया जाएगा। यदि आज की तारीख में याचिकाकर्ताओं/आवेदकों के अपने सी. आर. पर विचार करने के तर्क को स्वीकार कर लिया जाता है, तो पदोन्नति के लिए समीक्षा में कोई अतिरिक्त इनपुट (दूसरा और तीसरा लुक) नहीं होगा और विशेष संख्या 3 एस. बी. सभी तीन बार एक ही प्रोफाइल पर विचार करेगा और वह भी, केवल लेफ्टिनेंट कर्नल के रैंक में शामिल गोपनीय रिपोर्ट के साथ। यह निर्धारित चयन बोर्ड की नीतियों के विपरीत होता जो दूसरे और तीसरे लुक के लिए अतिरिक्त इनपुट को अनिवार्य करता है। अधिकारी इस तथ्य से अवगत थे और यही कारण है कि महिला अधिकारियों के सी. आर. पुरुष बैचों के अनुरूप थे, न कि उनके नवीनतम सी. आर.।

17. केंद्र सरकार द्वारा दायर जवाबी हलफनामे के अनुलग्नक आर-8 में कट ऑफ सी. आर. के बीच तुलना की गई है जिसमें 521 हैं।

नीतिशा और अन्य बनाम भारत संघ [डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई] 522

महिला अधिकारियों और संबंधित बैचों के पुरुष अधिकारियों के लिए गणना की गई। सारणीबद्ध कथन भारतीय सेना के विभिन्न रेजिमेंटों की स्थिति को इंगित करता है। उनमें से, हम पहले सैन्य आयुध कोर (ए. ओ. सी.) से संबंधित हैं। ए. ओ. सी. के लिए, सारणीबद्ध कथन निम्नलिखित स्थिति को इंगित करता है:

		सर्वर नो आर्म/सर्विसेज बैच कट- ऑफ-सी. आर. वॉस		पुरुष बैच कट-ऑफ-सी. आर. पर सी. ओ. आर. आर. ई. एस. पी.
4	एओसी			
1995		31 12 मई		31 12 मई
1996		31 13 मई		31 13 मई

1997	31 13 मई	31 13 मई
1998	31 14 मई	31 15 मई
1999	31 15 मई	31 15 मई
2000	31 16 मई	31 16 मई
2001	31 17 मई	31 17 मई
2002	31 18 मई	31 18 मई
2003	31 19 मई	31 19 मई
2004	31 20 मई	31 20 मई
2005	31 21 मई	31 21 मई

18. उपरोक्त सारणीकरण से पता चलता है कि महिला अधिकारियों के बैचों के लिए एक ही कट ऑफ अपनाया गया है, जिन्हें विशेष संख्या 3 एस. बी. में पुरुष अधिकारियों के संबंधित बैचों के लिए माना गया था। उदाहरण के लिए, 1995 के बैच के लिए, महिला अधिकारी और संबंधित पुरुष अधिकारी दोनों के लिए कट ऑफ 31 मई 2012 है। 2005 तक के बाद के बैचों के लिए, सारणीबद्ध चार्ट से पता चलता है कि वही कट ऑफ लागू किया गया है। जिस तरह से महिला अधिकारियों के सी. आर. को कर्नल के रूप में सूचीबद्ध करने के लिए कट ऑफ लागू किया गया है, वह मनमाना है क्योंकि यह दोनों उन सिद्धांतों के विपरीत हैं जो इस न्यायालय द्वारा नितिशा में अपने फैसले में निर्धारित किए गए थे और उस नीतिगत ढांचे के विपरीत है जिसे स्वयं भारतीय सेना द्वारा प्रतिपादित किया गया है।

19. हम इस तथ्य से अवगत हैं कि नितिशा में निर्णय पीसी के अनुदान से संबंधित है, जबकि वर्तमान मामले में न्यायालय उन अधिकारियों के पैनल से संबंधित है जिन्हें कर्नल के रूप में पदोन्नति के लिए पीसी दिया जाता है।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 15 एस सी आर।

चयन करें। इस संबंध में, 7 अक्टूबर 2002 के पत्र द्वारा निर्धारित नीतिगत ढांचा जो इस निर्णय के पहले भाग में निर्धारित किया गया है, यह स्पष्ट करता है कि नौ साल की गणना योग्य सेवा के बाद सी. आर. को ध्यान में रखा जाना आवश्यक था। इसके बाद, मात्रात्मक मूल्यांकन प्रणाली के अस्तित्व में आने के बाद, 17 मार्च 2011 के नीति परिपत्र द्वारा यह स्पष्ट किया गया था कि विभिन्न एस. बी. के लिए सी. आर. पर विचार विचार के समय प्रचलित नीति के अनुसार होगा। 23 दिसंबर 2017 का नीति परिपत्र उस प्रधानता को इंगित करता है जिसका श्रेय सी. आर. को दिया जाता है, जो कुल 100 अंकों में से 89 अंक रखता है। यह सी. आर. के सही मूल्यांकन और गणना के महत्व को दर्शाता है क्योंकि यह पदोन्नति का आधार है जिस पर विशेष संख्या 3 एस. बी. द्वारा विचार

किया जा रहा है। 31 अक्टूबर 2013 के नीति दस्तावेज में कहा गया है कि चयन बोर्ड के संचालन से पहले एम. एस. शाखा द्वारा बैच के अधिकारियों के संबंध में कट ऑफ सी. आर. जारी किए जाएंगे।

20. सेना के अधिकारियों द्वारा दायर जवाबी हलफनामे में, यह निर्दिष्ट किया गया है कि विशेष संख्या 3 एस. बी. के काम के उद्देश्य से, एक अधिकारी को तीन रूप दिए गए हैं, अर्थात्, प्रथम रूप, प्रथम समीक्षा और दूसरी समीक्षा। नतीजतन, यह कहा गया है कि यदि अब तक के सभी सी. आर. पर प्रथम दृष्टांत में ही विचार किया जाता है, तो द्वितीय दृष्टांत और अंतिम समीक्षा करने का उद्देश्य अनुचित होगा। हम इस तर्क से सहमत हैं। हालाँकि, इसने शायद अधिकारियों को अंतिम सी. आर. को बाहर करने के लिए न्यायसंगत ठहराया होगा, जिस पर अंतिम रूप से विचार किया जा सकता था और उससे पहले सी. आर., जिस पर पहली समीक्षा के चरण में विचार किया जा सकता था। हालाँकि, जैसा कि हमने पहले जो चार्ट संलग्न किया है, वह इंगित करता है कि वर्तमान मामले में महिला अधिकारियों को उनके पुरुष समकक्षों के साथ बराबरी करने के लिए मनमाने ढंग से एक कट ऑफ लागू किया गया था। कटऑफ की मनमानी इस तथ्य से स्पष्ट है कि कई वर्षों तक सी. आर. को पूरी तरह से गणना से बाहर रखा गया था। नितिशा में इस न्यायालय के फैसले में एक छिटपुट सजा को संदर्भ से बाहर नहीं किया जा सकता है।

21. हम यह देखने के लिए विवश हैं कि महिला अधिकारियों के न्यायसंगत अधिकार को हराने का रवैया किसी न किसी तरह से रहा है। इस तरह का दृष्टिकोण उन महिला अधिकारियों को न्याय प्रदान करने की आवश्यकता को नुकसान पहुंचाता है जिन्होंने कानून के तहत अपनी न्यायसंगत पात्रता प्राप्त करने के लिए इस न्यायालय के समक्ष एक लंबी और कठिन लड़ाई लड़ी है। नितिशा में फैसले के बाद भी, 523

नीतिशा और अन्य बनाम भारत संघ [डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़, सीजेआई] 524

महिला अधिकारियों को अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए बार-बार इस न्यायालय का रुख करने के लिए मजबूर किया गया है।

22. सेना के अधिकारियों की ओर से एक वैकल्पिक आधार तैयार करने की मांग की गई है ताकि अधिकारियों को समायोजित करने के लिए पर्याप्त रिक्तियां उपलब्ध न हों। इस संबंध में, यह सामान्य आधार है कि 21 नवंबर 2022 के पहले के एक आदेश में, अदालत ने सेना के अधिकारियों का बयान दर्ज किया कि नितिशा में इस अदालत के फैसले के अनुसार 150 रिक्तियां उपलब्ध कराई जानी थीं। मान लीजिए, जैसा कि काउंटर से संकेत मिलता है कि 108 रिक्तियों को भरा गया है। इसलिए रिक्तियों की अनुपलब्धता का आधार इस स्तर पर उपलब्ध नहीं होगा। इसलिए, हमारा स्पष्ट रूप से यह विचार है कि जिस तरह से आवेदकों को चयन के आधार पर कर्नल के पद के लिए सूची में शामिल करने से इनकार किया गया है, वह मनमाना है। संविधान के अनुच्छेद 14 में निहित निष्पक्षता के मौलिक सिद्धांतों का उल्लंघन करने के अलावा, पूरा दृष्टिकोण नितिशा में इस न्यायालय के फैसले के साथ-साथ सेना के अधिकारियों द्वारा निर्धारित लागू नीतिगत ढांचे दोनों के विपरीत रहा है।

23. हम तदनुसार आदेश देते हैं और निर्देश देते हैं कि:

(i) उन सभी महिला अधिकारियों के लिए विशेष संख्या 3 एस. बी. को फिर से बुलाने की एक नई कवायद इस आदेश की तारीख से एक पखवाड़े के भीतर आयोजित की जाएगी, जिन पर पहले विशेष संख्या 3 एस. बी. द्वारा विचार किया गया था (उन अधिकारियों को छोड़कर जिन्हें पहले ही सूचीबद्ध किया जा चुका है);

(ii) उपरोक्त निर्देश के अनुसरण में बुलाए जाने वाले विशेष संख्या 3 एस. बी. के दौरान, महान्यायवादी का कहना है कि किसी भी विवाद को दूर करने के लिए जून 2021 की एक सामान्य कटौती पर विचार किया जाएगा।

(iii) चूंकि इन कार्यवाहियों के लंबित रहने के दौरान, अधिकारियों में से एक, कर्नल (टाइम स्केल) आशा काले सेवानिवृत्त हो गई हैं, इसलिए उनके मामले पर भी इसी आधार पर विचार किया जाएगा; और

(iv) जिन अधिकारियों को पहले ही कर्नल के रूप में सूचीबद्ध या पदोन्नत किया जा चुका है, उन्हें किसी भी तरह से परेशान या प्रभावित नहीं किया जाएगा और न ही इन निर्देशों के कार्यान्वयन से उनकी वरिष्ठता प्रभावित होगी।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 15 एस सी आर।

24. विविध आवेदनों का तदनुसार निपटारा किया जाता है। 25. लंबित आवेदन, यदि कोई हों, का निपटारा कर दिया जाता है।

द्वारा तैयार किए गए हेडनोट:

विविध आवेदनों का निपटारा किया गया।

निधि जैन